

भील

सरल स्वभाव और योद्धा के गुण

भील मध्य भारत की एक जनजाति का नाम है। भील जनजाति भारत की सर्वाधिक विस्तृत क्षेत्र में फैली हुई जनजाति है। प्राचीन समय में यह लोग मिश्र से लेकर लंका तक फैले हुए थे [6]। भील जनजाति के लोग भील भाषा बोलते हैं।[7] भील जनजाति को " भारत का बहादुर धनुष पुरुष " कहा जाता है[8]भारत के प्राचीनतम जनसमूहों में से एक भीलों की गणना पुरातन काल में राजवंशों में की जाती थी, जो विहिल वंश के नाम से प्रसिद्ध था। इस वंश का शासन पहाड़ी इलाकों में था [9]। भील शासकों का शासन मुख्यत मालवा[10],दक्षिण

राजस्थान^[11], गुजरात ^[12], ओडिशा^[13] और महाराष्ट्र^[14] में था। भील गुजरात, मध्य प्रदेश, छत्तीसगढ़, महाराष्ट्र और राजस्थान में एक अनुसूचित जनजाति है। अजमेर में ख्वाजा मोईनुद्दीन हसन चिश्ती की दरगाह के खादिम भी भील पूर्वजों के वंशज हैं। भील त्रिपुरा और पाकिस्तान के सिन्ध के थारपरकर जिले में भी बसे हुये हैं। भील जनजाति भारत समेत पाकिस्तान तक विस्तृत रूप से फैली हुई है। प्राचीन समय में भील जनजाति का शासन शिवी जनपद जिसे वर्तमान में मेवाड़ कहते हैं, स्थापित था, जब सिकंदर ने मिनांडर के जरिए भारत पर आक्रमण किया तब पंजाब और शिवी जनपद के भील शासकों ने विश्वविजेता सिकंदर को भारत में प्रवेश नहीं करने दिया, सिकंदर को वापस जाना पड़ा।

भील



कुल जनसंख्या

खास आवास क्षेत्र

 भारत

गुजरात 3,441,945^[1]

मध्य प्रदेश 4,619,068^[2]

महाराष्ट्र 1,818,792^[3]

राजस्थान 2,805,948^[4]

भाषाएँ

भील भाषा

धर्म

आदिवासी धर्म 97% ^[5]

अन्य सम्बंधित समूह

राजस्थानी सिन्धी वारली हल्बी

राजस्थान में राणा पूंजा भील जी को याद किया जाता है , जिन्होंने महाराणा प्रताप के साथ मिलकर मुगलों के छक्के छुड़ा दिए। 1576 ई. के हल्दीघाटी युद्ध में राणा पूंजा ने अपनी सारी ताकत देश की रक्षा के लिए झोंक दी। हल्दीघाटी के युद्ध के अनिर्णित रहने में गुरिल्ला युद्ध प्रणाली का ही करिश्मा था, जिसे पूंजा भील के नेतृत्व में काम में लिया गया। इस युद्ध के बाद कई वर्षों तक मुगलों के आक्रमण को विफल करने में भीलों की शक्ति का अविस्मरणीय योगदान रहा तथा उनके वंश में जन्मे वीर नायक पूंजा भील के इस युगों-युगों तक याद रखने योग्य शौर्य के संदर्भ में ही मेवाड़ के राजचिन्ह में एक ओर राजपूत तथा एक दूसरी तरफ भील प्रतीक अपनाया गया है। यही नहीं इस भील वंशज सरदार की उपलब्धियों और योगदान की प्रमाणिकता के रहते उन्हें 'राणा' की पदवी महाराणा द्वारा दी गई। अब राजा पूंजा भील 'राणा पूंजा भील' कहलाये जाने लगे। वास्तव में वे

सच्चे देश सेबक थे। मेवाड़ और मेयो कॉलेज के राज चिन्ह पर भील योद्धा का चित्र अंकित है। बहुत से भील भारत में भील रेजिमेंट चाहते हैं। [15]। साथ ही साथ भील कई वर्षों से खुद का एक अलग राज्य भील प्रदेश की मांग कर रहे हैं [16] ।

भील इतिहास

टंट्या भील



द ट्राइब्स ऐन्ड कास्ट्स ऑफ सेन्ट्रल प्रोविन्सेस ऑफ इंडिया (1916) से एक चित्र

जन्म

1840/1842

भीलों का अपना एक लम्बा इतिहास रहा है। कुछ इतिहासकारों ने भीलों को द्रविड़ों से पहले का भारतीय निवासी माना तो कुछ ने भीलों को द्रविड़ ही माना है। मध्यकाल में भील राजाओं की स्वतंत्र सत्ता थी। करीब 11 वीं सदी तक भील राजाओं का शासन विस्तृत क्षेत्र में फैला था। इतिहास में अन्य जनजातियों जैसे कि मीना

आदि से इनके अच्छे संबंध रहे है। 6 वीं शताब्दी में एक शक्तिशाली भील राजा का पराक्रम देखने को मिलता है जहां मालवा के भील राजा हाथी पर सवार होकर विंध्य क्षेत्र से होकर युद्ध करने जाते हैं। जब सिकंदर ने मिनांडर के जरिए भारत पर हमला किया इस दौरान शिवी जनपद का शासन भील राजाओं के हाथों में था। भील पूजा और हिन्दू पूजा में काफी समानताएं मिलती हैं।
[17]

इंडर में एक शक्तिशाली भील राजा हुए जिनका नाम राजा मांडलिक रहा । राजा मांडलिक ने ही गुहिल वंश अथवा मेवाड़ के प्रथम संस्थापक राजा गुहादित्य को अपने इंडर राज्य में रखकर संरक्षण किया । गुहादित्य राजा मांडलिक के राजमहल में रहता और भील बालकों के साथ घुड़सवारी करता , राजा मांडलिक ने गुहादित्य को कुछ जमीन और जंगल दिए , आगे चलकर वही

बालक गुहादित्य इडर साम्राज्य का राजा बना ।

गुहिलवंश की चौथी पीढ़ी के शासक नागादित्य का व्यवहार भील समुदाय के साथ अच्छा नहीं था इसी कारण भीलों और नागादित्य के बीच युद्ध हुआ और भीलों ने इडर पर पुनः अपना अधिकार कर लिया ।

बप्पा रावल का लालन - पालन भील समुदाय ने किया और बप्पा को रावल की उपाधि भील समुदाय ने ही दी थी । बप्पारावल ने भीलों से सहयोग पाकर अरबों से युद्ध किया । खानवा के युद्ध में भील अपनी आखरी सांस तक युद्ध करते रहे ।

बाबर और अकबर के खिलाफ मेवाड़ राजपूतों के साथ कंधे से कंधा मिलाकर युद्ध करने वाले भील ही थे ।

मेवाड़ और मुगल समय में भील समुदाय को उच्च ओहदे प्राप्त थे, तत्कालीन समय में भील समुदाय को

रावत, भोमिया और जागीरदार कहा जाता था। राणा

पूजा भील और महाराणा प्रताप की आपसी युद्ध नीती से ही मेवाड़, मुगलो से सुरक्षित रहा। हल्दीघाटी का युद्ध मे राणापूजा जी और उनकी भील सेना का महत्वपूर्ण योगदान रहा। इसी कारण मेवाड़ चिन्ह मे एक तरफ महाराणा प्रताप जी और एक तरफ राणापूजा भील जी अर्थात राजपूत और भील का प्रतिकचिन्ह अस्तित्व मे आया। मुगलों के बाद जब मराठो ने मेवाड़ पर आक्रमण किया तब भी भील मेवाड़ के साथ खड़े रहे। भील , मराठा शासक वीर शिवाजी के साथ खड़े रहें। भील और राजपूतो मे खान-पान होता रहा ।

- गुजरात के डांग जिले के पांच भील राजाओं ने मिलकर अंग्रेजो को युद्ध में हरा दिया, लश्करिया अंबा में सबसे बड़ा युद्ध हुए, इस युद्ध को डांग का सबसे बड़ा युद्ध कहा जाता है । डांग के यह पांच भील राजा भारत के एकमात्र वंशानुगत राजा है और इन्हें भारत

सरकार की तरफ से पेंशन मिलती हैं , आजादी के पहले ब्रिटिश सरकार इन राजाओं को धन देती थी ।

- गुजरात में 1400 ईसा पूर्व के दौरान भील राजा का शासन । गुजरात के इडर ,डांग, अहमदाबाद और चांपानेर पावागढ़ में लंबे समय तक भील राजाओं का शासन रहा था।
- राजस्थान में कोटा,बांसवाड़ा,डूंगरपुर,मनोहरथाना, कुशलगढ़,भीनमाल, प्रतापगढ़,भोमटक्षेत्र और जगरगढ़ में भील राजाओं का शासन लंबे समय तक रहा था। राजस्थान में मेवाड़ भील कॉर्प है।

भील लोग आम जनता की सुरक्षा करते थे और यह भोलाई नामक कर वसूलते थे । शिसोदा के भील राजा रोहितास्व भील रहे थे । [18] अध्याय प्रथम वागड़ के आदिवासी: नररचय एवं अवधारणा - Shodhganga

- मध्यप्रदेश में मालवा पर भील राजाओं ने लंबे समय तक शासन किया , आगरा ,झाबुआ,ओम्कारेश्वर,अलीराजपुर पर भील राजाओं ने शासन किया । इंदौर स्थित भील पल्टन का नाम बदलकर पुलिस प्रशिक्षण विद्यालय रखा , मध्यप्रदेश राज्य गठन के पूर्व यहां भील सैना प्रशिक्षण केंद्र था। मालवा की मालवा भील कॉर्प थी।
- छत्तीसगढ़ का प्रमुख शहर भिलाई का नामकरण भील समुदाय के आधार पर ही हुआ है।
- महाराष्ट्र में कई भील विद्रोह हुए जिनमें खानदेश का भील विद्रोह प्रमुख रहा ।
- 1661 में राजपूतों ने भीलों के साथ मिलकर औरंगज़ेब को हरा दिया ।

सिंधु घाटी सभ्यता

सिंधु घाटी सभ्यता पर हो रहे शोध के दौरान वह से भगवान शिव और नाग के पूजा करने के प्रमाण मिले है साथ ही साथ बैल ,सूअर ,मछली , गरुड़ आदि के साथ - साथ प्रकृति पूजा के प्रमाण मिले है उस आधार पर शोधकर्ताओं के अनुसार सिंधु घाटी सभ्यता के लोग भील प्रजाति के ही थे। भील प्रजाति अपने आप में एक विस्तृत शब्द है जिसमें निषाद , शबर , किरात , पुलिंद , यक्ष , नाग और कोल आदि सम्मिलित है । इतिहासकारों ने माना कि करोड़ों वर्ष पूर्व भील प्रजाति के लोग यही पर वानर के रूप जन्मे और निरंतर विकासक्रम के बाद वे होमो सेपियन बने , धीरे - धीरे यही लोग एक जगह बस गए और गणराज्य स्थापित किया , इनके शासक हुआ करते थे , सरदार के आज्ञा के बगैर कोई कुछ नहीं कर सकता था । भील प्रजाति के लोग धनुष का उपयोग करते थे , समय के साथ उन्होंने नाव चलना सीख ली और वे हिंदेशिया की तरफ आने वाले पहले लोग थे , ये

भील प्रजाति के लोग मिश्र से लेकर लंका तक फैले हुए थे , इन्होंने ही सिंधु घाटी सभ्यता बसाई , जब फारस , इराक में बाढ आई तब वह के लोग भारत की तरफ आए , यहां के मूलनिवासियों ने उनकी सहायता करी , लेकिन उन लोगो ने भारत पर कब्जा जमाना शुरू कर दिया , भील प्रजाति के शासकों के साथ छल - कपट कर उन्हें धोखे से हरा दिया फिर यही भील प्रजाति के लोग धीरे - धीरे बिखर गए [19] ।

मुद्दे

भीलो के प्रमुख मुद्दे

- भील प्रदेश - भील जनजाति करीब 30 वर्षों से भी अधिक समय से भील प्रदेश राज्य बनाने के लिए आंदोलन कर रही है , भील प्रदेश काफी पुराना मामला है , पहले जन्हा जंहा भीलों का शासन था ,

अथवा भीलों की जनसंख्या अधिक थी वह क्षेत्र भील प्रदेश कहलाता था , लेकिन जैसे जैसे भीलों का राजपाठ छीना गया , वैसे ही भील प्रदेशों के नाम बदल दिए गए ।

- भील रेजिमेंट - भील भारत देश में एक भील रेजिमेंट चाहते हैं ,
- हल्दीघाटी राणा पूंजा : भीलों का इतिहास हल्दीघाटी से जुड़ा रहा है ,लेकिन अभी तक वहां पर्यटन स्थल विकसित नहीं हुआ , हाल ही में वहां पर्यटन विकसित करने की घोषणा की गई
- सिंगाही : एक समय उत्तरप्रदेश का सिंगाही क्षेत्र भील शासकों के खेरगढ़ राज्य की राजधानी हुआ करता था , खेरगढ़ उस दौरान नेपाल तक फैला था , हाल ही में इस क्षेत्र से खुदाई के दौरान भील युग कालीन मूर्तियां प्राप्त हुई जो उस दौरान के भील इतिहास को

बयां करती है , लेकिन सरकार उस क्षेत्र संबंधित विकास कार्य नहीं कर रही है [20]।

- सिंधु घाटी सभ्यता - सिंधु घाटी सभ्यता पर हो रहे शोध से पता चला है कि , सिंधु घाटी सभ्यता भील और अन्य आदिवासियों की सभ्यता थी , भीलों ने हजारों वर्ष पूर्व विशाल किले , महल , घर , नहरे , कुएं और अन्य विकास कार्य कर लिए थे , लेकिन सरकार स्कूल पाठ्यक्रम में यह सब सामिल नहीं कर रही है ।
- सरदार पटेल मूर्ति [स्टैचू ऑफ यूनिटी] - स्टैचू ऑफ यूनिटी बनाने के लिए हजारों भील और अन्य आदिवासियों की जमीन हड़पी गई , उन्हें अपने घर छोड़कर जाना पड़ा , सरकार ने नहीं आदिवासियों के लिए घर बनाए और नहीं उन्हें मुवावजे दिए ।
- आदिवासी जब भी कोई मुद्दा उठाते है , उन मुद्दों को दबा दिया जाता है

- आदिवासी क्षेत्र : जनहा आदिवासियों की आबादी अधिक है , उस क्षेत्र को संविधान के अनुसार , आदिवासी क्षेत्र घोषित किया जाए , ताकी मूलनिवासी लोगो का सही मायने में विकास हो सके , उनके अधिकारों की रक्षा हो सके ।

भील आन्दोलन

1632 का भील विद्रोह = 1632 के समय भारत में मुगल सत्ता स्थापित थी , उस दौरान प्रमुख रूप से भीलों ने मुघलों का विद्रोह किया ।

1643 = 1632 के बाद भील और गोंड जनजाति ने मिलकर मुगलों के खिलाफ 1643 में विद्रोह किया [21]।

1857 के पूर्व भीलों के दो अलग-अलग विद्रोह हुए। महाराष्ट्र के खानदेश में भील काफी संख्या में निवास

करते हैं। इसके अतिरिक्त उत्तर में विंध्य से लेकर दक्षिण पश्चिम में सहाद्रि एवं पश्चिमी घाट क्षेत्र में भीलों की बस्तियाँ देखी जाती हैं। 1816 में पिंडारियों के दबाव से ये लोग पहाड़ियों पर विस्थापित होने को बाध्य हुए। पिंडारियों ने उनके साथ मुसलमान भीलों के सहयोग से क्रूरतापूर्ण व्यवहार किया। इसके अतिरिक्त सामन्ती अत्याचारों ने भी भीलों को विद्रोही बना दिया। 1818 में खानदेश पर अंग्रेजी आधिपत्य की स्थापना के साथ ही भीलों का अंग्रेजों से संघर्ष शुरू हो गया। कैप्टेन बिग्स ने उनके नेताओं को गिरफ्तार कर लिया और भीलों के पहाड़ी गाँवों की ओर जाने वाले मार्गों को अंग्रेजी सेना ने सील कर दिया, जिससे उन्हें रसद मिलना कठिन हो गया। दूसरी ओर एलफिंस्टन ने भील नेताओं को अपने पक्ष में करने का प्रयास किया और उन्हें अनेक प्रकार की रियायतों का आश्वासन दिया। पुलिस में भर्ती होने पर

अच्छे वेतन दिये जाने की घोषणा की। किंतु अधिकांश लोग अंग्रेजों के विरुद्ध बने रहे।

1819 में पुनः विद्रोह कर भीलों ने पहाड़ी चौकियों पर नियंत्रण स्थापित कर लिया। अंग्रेजों ने भील विद्रोह को कुचलने के लिए सतमाला पहाड़ी क्षेत्र के कुछ नेताओं को पकड़ कर फाँसी दे दी। किंतु जन सामान्य की भीलों के प्रति सहानुभूति थी। इस तरह उनका दमन नहीं किया जा सका। 1820 में भील सरदार दशरथ ने कम्पनी के विरुद्ध उपद्रव शुरू कर दिया। पिण्डारी सरदार शेख दुल्ला ने इस विद्रोह में भीलों का साथ दिया। मेजर मोटिन को इस उपद्रव को दबाने के लिए नियुक्त किया गया, उसकी कठोर कार्रवाई से कुछ भील सरदारों ने आत्मसमर्पण कर दिया।

1822 में भील नेता हिरिया भील ने लूट-पाट द्वारा आतंक मचाना शुरू किया, अतः 1823 में कर्नल राबिन्सन को विद्रोह का दमन करने के लिए नियुक्त किया। उसने बस्तियों में आग लगवा दी और लोगों को पकड़-पकड़ कर क्रूरता से मारा। 1824 में मराठा सरदार त्रियंबक के भतीजे गोड़ा जी दंगलिया ने सतारा के राजा को बगलाना के भीलों के सहयोग से मराठा राज्य की पुनर्स्थापना के लिए आह्वान किया। भीलों ने इस प्रस्ताव को स्वीकार कर लिया एवं अंग्रेज सेना से भिड़ गये तथा कम्पनी सेना को हराकर मुरलीहर के पहाड़ी किले पर अधिकार कर लिया। परंतु कम्पनी की बड़ी बटालियन आने पर भीलों को पहाड़ी इलाकों में जाकर शरण लेनी पड़ी। तथापि भीलों ने हार नहीं मानी और पेडिया, बून्दी, सुतवा आदि भील सरदार अंग्रेजों के खिलाफ संघर्ष करते रहे। कहा गया है कि लेफ्टिनेंट आउट्रम, कैप्टेन रिगबी एवं ओवान्स ने समझा बुझा कर

तथा भेद नीति द्वारा विद्रोह को दबाने का प्रयास किया। आउट्रम के प्रयासों से अनेक भील अंग्रेज सेना में भर्ती हो गये और कुछ शांतिपूर्वक ढंग से खेती करने लगे। उन्हें तकाबी ऋण दिलवाने का आश्वासन दिया।

निवास क्षेत्र

भील शब्द की उत्पत्ति "वील" से हुई है जिसका द्रविड़ भाषा में अर्थ होता है "धनुष"। भील जाति दो प्रकार से विभाजित है-

1. उजलिया/क्षत्रिय भील- उजलिया भील मूल रूप से वे क्षत्रिय है जो सामाजिक/मुगल आक्रमण के समय जंगलो में चले गए एवं मूल भीलों से वैवाहिक संबंध स्थापित कर लेने से स्वयं को उजलिया भील कहने लगे मालवा में रहने वाले भील वही है। इनके रिति रिवाज क्षत्रियों की तरह ही है। इनमें वधूमूल्य नहीं पाया जाता

और ना ही ये भीली भाषा बोलते है। इनके चेहरे और शरीर की बनावट, कद काठी प्राचीन क्षत्रियों से मिलती है।

2. लंगोट भील-ये वनों में रहने वाले मूल भील है इनके रीति रिवाज आज भी पुराने है। इनमें वधूमूल्य का प्रचलन पाया जाता है। म.प्र. के निमाड में रहने वाले अधिकांश जनजाति यही है स्वभाव से भोले होते हैं, बदले की भावना में आक्रामक भी होते हैं यह मध्यप्रदेश के झाबुआ, अलिराजपुर, धार, पेटलावाद, क्षेत्रों में निवास करते हैं भील अपने पूर्वजों को पूजते है और मध्यप्रदेश के झाबुआ जिले के राणापुर के पास बाबा देव को पूजते है।

उप-विभाग

भील कई प्रकार के कुख्यात क्षेत्रीय विभाजनों में विभाजित हैं, जिनमें कई कुलों और वंशों की संख्या है। गुजरात में मुख्य विभाग बरदा , भील गरासिया , ढोली भील , डुंगरी भील , डुंगरी गरासिया , भील पटेलिया, रावल भील , तड़वी भील , भागलिया , भिलाला , पावरा, वासरी या वासेव , डुंगरी गरासिया , और वसावा , महाराष्ट्र में हैं । भील मावची और कोतवाल उनके मुख्य उप-समूह हैं। राजस्थान में , वे भील गरासिया , धोली भील , डुंगरी भील , डुंगरी गरासिया , मेवासी भील , रावल भील , तड़वी भील , भागलिया , भिलाला , पावरा, वासव और वासेव, खादिम जाति के रूप में मौजूद हैं

[22]

उल्लेखनीय लोग

पौराणिक और धार्मिक

...

- एकलव्य - एकलव्य एक महान धनुर्धर थे , उनके पिता श्रृंगवेरपुर के राजा थे , और वे अपने पिता के बाद राजा बने । वर्तमान में एकलव्य नाम से कई संस्थान चल रहे है , वे आधुनिक तीरंदाजी शैली के निर्माता रहे ।
- संत सुरमाल दास भील - संत सुरमल जी खराड़ी , आदिवासी भील धर्म के प्रमुख गुरु थे , उनसे संबंधित एक पुस्तक प्रकाशित हुई है [23] ।
- महर्षि वाल्मीकि - महर्षि वाल्मीकि जी रामायण के रचयिता है ।
- गुहराजा - निषाद राज जिन्होंने राम भगवान की सहायता करी ।
- माता शबरी - माता शबरी एक राजकुमारी थी , उनके पिता राजा थे , माता शबरी रामभक्त थी , राजकुमारी शबरी की शादी भील राजकुमार से हुई थी ।

क्रांतिकारी

...

- सरदार हेमसिंह भील - बाड़मेर के सरदार पाकिस्तानी सेना से युद्ध किया ।
- टंट्या भील - मराठो के हार के बाद अंग्रेजी सत्ता से संघर्ष।
- नानक भील - अंग्रेजो का विरोध , शिक्षा का प्रचार किया ।
- सरदार हिरीया भील - अंग्रजों का विरोध

मराठो ने सहयोग मांगा ।

- कृशण भिल - पाकिस्तान में प्रमुख राजनेता ।
- गुलाब महाराज - संत थे , अंगेजो के खिलाफ असहकर आंदोलन शुरू किया , सामाजिक कार्य किया ।

- काली बाई - आधुनिक एकलव्य कहीं जाती है , शिक्षा और गुरु के लिए बलिदान दिया , अंग्रेज और महारावल का विरोध ।
- भीमा नायक - 1857 के प्रथम स्वतंत्रता सेनानी ।
- गोविन्द गुरु - प्रमुख समाजसुधारक ।
- ठक्कर बापा - आदिवासियों के मसीहा ।
- मोतीलाल तेजावत - राजस्थान के प्रमुख ब्रिटिश विद्रोही ।

शिक्षा का क्षेत्र

...

- राजेन्द्र भारूड - भील आदिवासी समाज के महाराष्ट्र में पहले आईएएस अफसर [24] ।

कला प्रेमी

...

- कृष्णा भील - पाकिस्तान के प्रमुख गीतकार , वे मारवाड़ी , पंजाबी और उर्दू समेत अन्य भाषाओं में

गीत गाते थे [25]।

- दिवालीबेन भील - गाईका , गुजरात
- लाडो भील - पिथोरा पेंटिंग ,

मध्यप्रदेश

- भूरी बाई भील - पिथोरा पेंटिंग
- तगाराम भील - अलघोजा वादक , राजस्थान

खेल क्षेत्र

...

भील राजा

- राजा पुरुरवा भील - राजा पुरुरवा भील पुष्कलावती देश के राजा थे , यह वर्तमान में पाकिस्तान में है[26] ।
यही आगे चलकर महावीर स्वामी कहलाए ।

- राजा विश्वासु भील - नीलगिरी के पहाड़ी क्षेत्र पूरु के राजा, इन्हे ही भगवान जगन्नाथ जी की मूर्ति प्राप्त हुई थी ।
- राजा सुबाहु - इनका शासन हिमालय क्षेत्र में था , इनकी राजधानी श्रीनगर गढ़वाल थी , इन्होंने पांडवो की सहायता करी [27] ।
- यलम्बर - यह नेपाल के भील प्रजाति [28] के किरात राजा थे , इन्होंने गोपालवंश को पराजित कर नेपाल में किरात वंश की नींव रखी ।
- राजा धन्ना भील 850 ईसा पूर्व मालवा के शासक थे। [29][30] वे बहादुर , कुशल और शक्तिशाली राजा थे । उनके वंशजों ने 387 वर्ष मालवा पर राज किया इस दौरान मालवा का विकास हुआ ।

उन्हीं के वंश में जन्मे एक भील राजा ने 730 ईसा पूर्व के दौरान दिल्ली के शासक को चुनौती दी , इस प्रकार

मालवा उस समय एक शक्ति के रूप में विद्यमान था।

[31]।

- राजकुमार विजय - यह भील प्रजाति के पूलिंद राजा थे , इनका शासन वर्तमान के बंगाल में था [32] , उस समय भारत बंगाल एक थे , राजकुमार विजय का उल्लेख महावंश आदि इतिहास ग्रन्थों में हुआ है। परम्परा के अनुसार उनका राज्यकाल 543-505 ईसापूर्व में था , वे श्रीलंका आए , श्रीलंका में उन्होंने सिंहल और क्षत्रिय स्त्री से विवाह किया जनके फलस्वरूप वेदा जनजाति की उत्पत्ति हुए , यह जनजाति भारत से ही चलकर श्रीलंका तक पहुंची यह इतिहासकारों का मानना है [33]।
- राजा खादिरसार भील - जैन ग्रंथों के अनुसार राजा खादिरसार मगध के राजा थे , राजा खादिरसार की पत्नी का नाम चेलमा था , प्रारंभ में राजा खादिरसार

बौद्ध धर्म के अनुयाई थे , परन्तु रानी चेलामा के उपदेश से प्रभावित होकर उन्होंने जैन धर्म अपना लिया और महावीर स्वामी जी के प्रथम भक्त बन गए [34] ।

- राजा गर्दभिल्ल - उज्जैन के शासक , इनके उत्तराधिकारी सम्राट विक्रमादित्य हुए जिन्होंने शक शकों को पराजित किया , उनके नाम से ही कुल 14 राजाओं को विक्रमादित्य की उपाधि दी गई ।
- राजा देवो भील - यह ओगाना - पनारवा के शासक थे इनका समयकाल बापा रावल के समय से मिलता है , बप्पा रावल के बुरे दिनों में इन्होंने बेहद सहायता करी , अरबों को युद्ध में खदेड़ा ।
- राजा बालिय भील - यह ऊंदेरी के शासक थे और बप्पा रावल के मित्र थे , अरबों के खिलाफ इन्होंने बप्पा रावल का साथ दिया ।
- राजा बांसिया भील - बांसवाड़ा के संस्थापक [35] ।

- राजा डूंगरिया भील - डूंगरपुर के संस्थापक ।
- राजा कोटिया भील - कोटा के संस्थापक , अकेलगढ़ किले का निर्माण , नीलकंठ महादेव मंदिर स्थापित किया ।
- राणा पूंजा - भोमट और पानारवा के शासक , महाराणा प्रताप के प्रमुख सहयोगी , हल्दीघाटी युद्ध के वीर योद्धा , जिनके पास महाराणा और अकबर के संरक्षक बेरम खा सहयोग लेने आए [36] ।
- राजा विंध्यकेतु - मां कालिका के भक्त , विंध्य के राजा ।
- राजा जैतसी परमार भील - आबू के शासक
- राजा चक्रसेन भील - मनोहर थाना के शासक , किले का निर्माण कराया , 1675 तक शासन किया ।
- राजा सोनारा भील - राजस्थान में सलूंबर के शासक ।
- राजा मंडिया भील - मांडलगढ़ के शासक , मांडलगढ़ किले का निर्माण कराया ।

- राजा चम्पा भील - राजा चम्पा भील ने चांपानेर की स्थापना की थी , वे 14वीं शताब्दी में चांपानेर के शासक बने , उन्होंने चांपानेर किला बनवाया था ।
- राजा राम भील - राजा राम भील रामपुरा के शासक थे , व एक शक्तिशाली शासक थे , उन्होंने मार्चिंग आक्रमणकारियों से युद्ध किया और इसमें उनकी गर्दन काट गई लेकिन उनका धड़ दुश्मन से लड़ता रहा ।
- राजा आशा भील - राजा आशा भील अहमदाबाद के शासक थे , उन्होंने अहमदाबाद में उद्योगों की नींव रखी , इनके समय अहमदाबाद में नए सड़क , पेयजल स्रोतों आदि का निर्माण हुआ ।
- राजा मनोहर भील - उन्होंने मनोहर थाना शहर की स्थापना करी और मनोहर थाना किला बनवाया ।
- राजा पेमला भील - भोराई के शासक
- सरदार उम्मेद भील - सगबारा प्रमुख

- राजा मांडलिक - इडर के शासक
- राजा भानु भील - भानपुरा के संस्थापक
- राजा आगरिया भील - आगर मालवा के संस्थापक ।
- राजा गलियाकोट - डूंगरपुर में स्थित गलियाकोट के संस्थापक ।
- राजा भाभरदेव - प्रतापगढ़ के शासक 1531 [37]।
- राजा देव भील - राजस्थान के देवलिया के शासक थे , 1561 में इन्हे धोखे से मार दिया गया [38]।
- सरदार चार्ल नाईक - औरंगाबाद स्थित ब्रिटिश सेना पर 1819 में आक्रमण कर दिया , लेकिन ब्रिटिशों के साथ हुए युद्ध में वे शहीद हो गए [39]।
- श्री दोशरा भील - यह एक भील शासिका थी , इनका शासन मालवा से लेकर गुजरात के विराटनगर तक था [40]।
- देव मीणी - भील शासिका [41]।

- राजा चौरासी मल - बागर / वागड़ प्रमुख 1175 [42]।
- सरदार मंडालिया भील - भिनाय ठिकाना प्रमुख 1500 से 1600 के आस पास [43]।।
- राजा सांवलिया भील - ईडर के शासक , इन्होंने ईडर की सीमा पर सांवलिया शहर बसाया [44]।
- फाफामाऊ के राजा - फाफामाऊ , दिल्ली के समीप जगह है जहां पर भील ताजा का आधिपत्य था [45]।
- वेगड़ाजी भील - वेगड़ा भील , गिरनार के पहाड़ी क्षेत्र के शासक थे , ये भगवान शिव के भक्त थे ।
- बिलग्राम - उत्तरप्रदेश के हरदोई जिले के बिलग्राम क्षेत्र को भीलों ने है बसाया था , यह क्षेत्र भीलग्राम के नाम से विख्यात था और राजा हिरण्य के समय अस्तित्व में था , करीब 9 वी से 12 शताब्दी के बीच भील राजाओं पर बाहरी आक्रमणकारियों ने आक्रमण किया और क्षेत्र उनसे पा लिया [46]।

मंदिर

- नील माधव - राजा विश्ववासु भील को नील भगवान की मूर्ति प्राप्त हुए , उन्होंने नीलगिरी की पहाड़िया में मूर्ति स्थापित करी , वर्तमान में इस जगह को जगन्नाथ धाम कहा जाता है यह ओडिशा में है ।
- भादवा माता मंदिर - भादवा माता मंदिर नीमच जिले में है , भादवा माता भीलों की कुलदेवी है , रुपा भील के स्वप्न में साक्षात् मां ने दर्शन दिए ।
- जालपा माता मंदिर - राजगढ़ में पहाड़ी पर जालपा माता मंदिर है। , यह मंदिर भील शासकों ने बनवाया था ।
- शबरी धाम - गुजरात में स्थित है
- एकलव्य मंदिर - गुड़गांव में स्थित है ।

- आमजा माता - उदयपुर में स्थित है , भीलों की कुलदेवी है ।
- जटाऊँ शिव मंदिर - इस मंदिर का निर्माण 11 वी सदी में भीलवाड़ा में भील शासकों ने करवाया था ।
- सप्तश्रृंगी - महाराष्ट्र में भील और मराठा की कुल देवी ।
- तुंडेश्वर महादेव - यह महादेव मंदिर देवप्रयाग में स्थित है , तुंडा भील ने यह तपस्या की थी [47] ।
- भिलट देव - भीलों के प्रमुख देवता [48] ।
- भगवान गेपरनाथ मंदिर - यह मंदिर कोटा जिले में स्थित है , यह एक शिव मंदिर है , इस मंदिर का निर्माण भील राजाओं ने और उनके शैव गुरु द्वारा किया गया था [49] ।

संस्कृति



एक भील कन्या

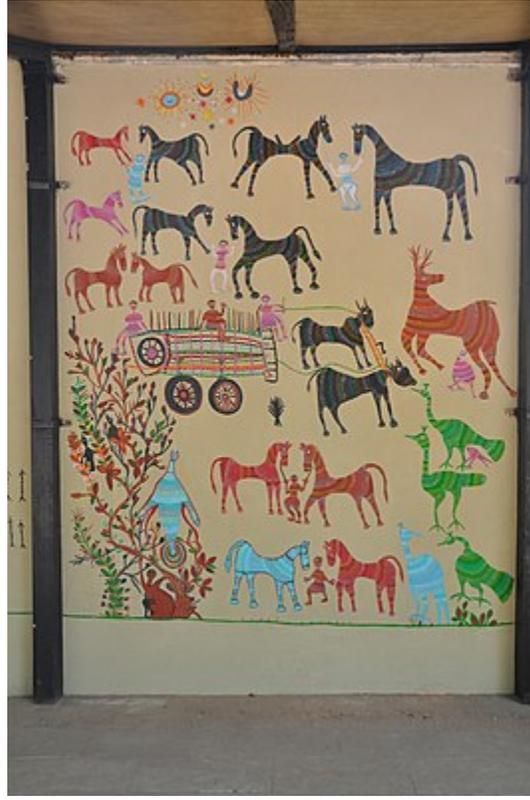
भीलों के पास समृद्ध और अनोखी संस्कृति है। भील अपनी पिथौरा पेंटिंग के लिए जाना जाता है।^[50] घूमर भील जनजाति का पारंपरिक लोक नृत्य है।^{[51][52]} घूमर

नारीत्व का प्रतीक है। युवा लड़कियां इस नृत्य में भाग लेती हैं और घोषणा करती हैं कि वे महिलाओं के जूते में कदम रख रही हैं।

कला

...

भील पेंटिंग को भरने के रूप में बहु-रंगीन डॉट्स के उपयोग की विशेषता है। भूरी बाई पहली भील कलाकार थीं, जिन्होंने रेडीमेड रंगों और कागजों का उपयोग किया था।



अन्य ज्ञात भील कलाकारों में लाडो बाई , शेर सिंह, राम सिंह और डब्बू बारिया शामिल हैं।^[53]

भोजन

...

भीलों के मुख्य खाद्य पदार्थ मक्का , प्याज , लहसुन और मिर्च हैं जो वे अपने छोटे खेतों में खेती करते हैं। वे स्थानीय जंगलों से फल और सब्जियां एकत्र करते हैं। त्योहारों और अन्य विशेष अवसरों पर ही गेहूं और

चावल का उपयोग किया जाता है। वे स्व-निर्मित धनुष और तीर, तलवार, चाकू, गोफन, भाला, कुल्हाड़ी इत्यादि अपने साथ आत्मरक्षा के लिए हथियार के रूप में रखते हैं और जंगली जीवों का शिकार करते हैं। वे महुआ (मधुका लोंगिफोलिया) के फूल से उनके द्वारा आसुत शराब का उपयोग करते हैं। त्यौहारों के अवसर पर पकवानों से भरपूर विभिन्न प्रकार की चीजें तैयार की जाती हैं, यानी मक्का, गेहूं, जौ, माल्ट और चावल। भील पारंपरिक रूप से सर्वाहारी होते हैं।^[54]

आस्था और उपासना

...

प्रत्येक गाँव का अपना स्थानीय देवता (ग्रामदेव) होता है और परिवारों के पास भी उनके जतीदेव, कुलदेव और कुलदेवी (घर में रहने वाले देवता) होते हैं जो कि पत्थरों के प्रतीक हैं। 'भाटी देव' और 'भीलट देव' उनके नाग-

देवता हैं। 'बाबा देव' उनके ग्राम देवता हैं। बाबा देव का प्रमुख स्थान झाबुआ जिले के ग्राम समोई में एक पहाड़ी पर है। करकुलिया देव उनके फसल देवता हैं, गोपाल देव उनके देहाती देवता हैं, बाग देव उनके शेर भगवान हैं, भैरव देव उनके कुत्ते भगवान हैं। उनके कुछ अन्य देवता हैं इंद्र देव, बड़ा देव, महादेव, तेजाजी, लोथा माई, टेकमा, ओर्का चिचमा और काजल देव।

उन्हें अपने शारीरिक, मानसिक और मनोवैज्ञानिक उपचारों के लिए अंधविश्वासों और भोपों पर अत्यधिक विश्वास है।^[54]

त्यौहार

...

कई त्यौहार हैं, अर्थात्। भीलों द्वारा मनाई जाने वाली राखी, नवरात्रि, दशहरा, दिवाली, होली। वे कुछ

पारंपरिक त्योहार भी मनाते हैं। अखातीज, दीवा(हरियाली अमावस)नवमी, हवन माता की चालवानी, सावन माता का जतरा, दीवासा, नवाई, भगोरिया, गल, गर, धोबी, संजा, इंदल, दोहा आदि जोशीले उत्साह और नैतिकता के साथ।

कुछ त्योहारों के दौरान जिलों के विभिन्न स्थानों पर कई आदिवासी मेले लगते हैं। नवरात्रि मेला, भगोरिया मेला (होली के त्योहार के दौरान) आदि।^[54]

नृत्य और उत्सव

...

उनके मनोरंजन का मुख्य साधन लोक गीत और नृत्य हैं। महिलाएं जन्म उत्सव पर नृत्य करती हैं, पारंपरिक भोली शैली में कुछ उत्सवों पर ढोल की थाप के साथ विवाह समारोह करती हैं। उनके नृत्यों में लाठी (कर्मचारी) नृत्य,

गवरी/राई, गैर, द्विचकी, हाथीमना, घुमरा, ढोल नृत्य, विवाह नृत्य, होली नृत्य, युद्ध नृत्य, भगोरिया नृत्य, दीपावली नृत्य और शिकार नृत्य शामिल हैं। वाद्ययंत्रों में हारमोनियम , सारंगी , कुंडी, बाँसुरी , अपांग, खजरिया, तबला , जे हंझ , मंडल और थाली शामिल हैं। वे आम तौर पर स्थानीय उत्पादों से बने होते हैं।^[54]

भील लोकगीत

...

1. सुवंटिया - (भील स्त्री द्वारा)

2. हमसीढो- भील स्त्री व पुरूष द्वारा युगल रूप में

किले

- अकेलगढ का किला - कोटिया भील द्वारा इस किले का निर्माण कराया गया।

- मनोहरथाना किला - राजा मनोहर भील द्वारा , मनोहर थाना में। इस्किले का निर्माण कराया गया।
- भोराइगढ़ - भौराई पाल में स्थित है
- मांडलगढ़ का किला - राजा मंडियां भील द्वारा इस किले का निर्माण कराया गया।
- रामपुर किला - इस किले का निर्माण राजा राम भील ने कराया था , यह किला मध्यप्रदेश में स्थित है [55] ।

फिल्म और धारावाहिक

- इज्जत फिल्म - 1938 [56]
- एकलव्य फिल्म
- एकलव्य धारावाहिक
- भारत का वीर पुत्र महाराणा प्रताप
- तात्या भील - शॉर्ट फिल्म
- भीमा नायक - शॉर्ट फिल्म

- सेनापति फिल्म
- कन्नप तमिल फिल्म

इन्हें देखे

- भील बेरी झरना
- चितरिया
- पचपदरा झील
- पानरवा

सन्दर्भ

1. "Gujarat: Data Highlights the Scheduled Tribes" (PDF). Census of India 2001. Census Commission of India. मूल से 24 सितंबर 2015 को पुरालेखित (PDF). अभिगमन तिथि 2008-03-31.

2. "Madhya Pradesh: Data Highlights the Scheduled Tribes" (PDF). Census of India 2001. Census Commission of India. मूल से 19 दिसंबर 2008 को पुरालेखित (PDF). अभिगमन तिथि 2008-03-06.
3. "Maharashtra: Data Highlights the Scheduled Tribes" (PDF). Census of India 2001. Census Commission of India. मूल से 23 अक्तूबर 2013 को पुरालेखित (PDF). अभिगमन तिथि 2008-03-31.
4. "Rajasthan: Data Highlights the Scheduled Tribes" (PDF). Census of India 2001. Census Commission of